अध्ययन सामग्री
बी.ए.(संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
आरा (वी.कुं.सिं. वि०)

20.05.20

षिद्गौरादिभ्यश्च

सूत्र का शब्दार्थ है - (च) और (षिद्गौरादिभ्यः) षित् और गौरादि से। यहाँ सूत्रस्थ च से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्', 'अन्यतो ङीष्' से 'ङीष्' तथा अधिकार सूत्र 'स्त्रियाम्' की अनुवृत्ति करनी होगी। सूत्रस्थ 'गौरादि' आकृतिगण है और इसमें 'गौर', 'मत्स्य' और 'अनडुह' आदि का समावेश होता है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा —

षित् प्रातिपदिक (जिसका षकार इत् हो) और गौरादिगण में पठित 'गौर' आदि से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीष्' (ई) प्रत्यय होता है।

उदाहरण - नर्तकी (नाचने वाली), गौरी (गौर वर्ण वाली स्त्री) यहाँ षित् प्रातिपदिक 'नर्तक' से ङीष् प्रत्यय तथा 'गौर' शब्द से ङीष् प्रत्यय हुआ है।

आमनडुह इति - अर्थ है - स्त्रीलिङ्ग में 'अनडुह्' शब्द को विकल्प से 'आम्' का आगम होता है।

उदाहरण - गौरादिगणस्थ 'अनडुह्' से 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय हो 'अनडुह् ई' रूप बनने पर

'आमनडुह: स्त्रियाम् वा' वार्तिक से 'आम्' आगम हो

अनडु आ ह् ई रूप बनता है।

(आम् का मकार इत्संज्ञक है)

तब उकार को यण् वकार ('इको यणचि' सूत्र से) होकर

अनड्व् आ ह् ई — अनड्वाही (गाय) रूप

सिद्ध होता है।

आम् के अभाव पक्ष में 'अनडुही' रूप ही रहता है।

पिप्पल्यादि गण में पठित पिप्पली आदि शब्दों से भी स्त्रीलिङ्ग में 'ङीष्' होता है।

रूपसिद्धि: — नर्तकी

'नृती गात्रविक्षेपे' धातु से नृत्यति इस विग्रह में नृत् धातु से 'शिल्पिनि ष्वुन्' से 'ष्वुन्' प्रत्यय होने पर उसमें ष् और न् की इत्संज्ञा होती है। शेष 'वु' के स्थान पर 'युवोरनाकौ' से 'अक्' आदेश, गुण और रपरत्व के बाद 'नर्तक' शब्द बनता है। (प्रत्यय का षकार इत् होने से यह षित् होता है। यहाँ 'षित्' होने के कारण स्त्रीत्व की विवक्षा में नर्तक शब्द से 'षिद्गौरादिभ्यश्च' से ङीष् होता है।

नर्तक ई

'यस्येति च' से अन्तिम अकार का लोप होने पर

नर्तक् ई — नर्तकी शब्द बनता है

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' सूत्र से सु विभक्ति

नर्तकी सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा, तथा लोप होने पर 'स्' शेष रहता है —

नर्तकी स्

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से 'स्' का लोप होने पर 'नर्तकी' पद बनता है।

पुंयोगादाख्यायाम्

सूत्र का शब्दार्थ है – पुंयोगात् (पुंयोग से) (आख्यायाम्) कथन में। किन्तु इससे सूत्र का भावार्थ स्पष्ट नहीं होता। सूत्र में 'आख्यायाम्' पद में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग पञ्चमी के अर्थ में हुआ है। सूत्र की वृत्ति में कहा गया है –

या पुमाख्या पुंयोगात् स्त्रियां वर्तते ततो ङीष्

'पुंयोगात्' में प्रयुक्त 'पुम्' शब्द का प्रयोग सूत्रार्थ में दो बार होता है – पहली बार योग के साथ और दूसरी बार आख्या के साथ। प्रथम बार उसमें तृतीया विभक्ति होती है और दूसरी बार लुप्त षष्ठी। प्रथम प्रकार से बने हुए 'पुंयोगात्' में हेतु पञ्चमी है। उसका अर्थ है – पुरुष से सम्बन्ध (योग) के कारण। द्वितीय प्रकार से बने हुए 'पुमाख्या' का अर्थ है – पुरुष वाचक।

सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' तथा अधिकार सूत्र 'स्त्रियाम्' की अनुवृत्ति करनी होगी। साथ ही 'अन्यतो ङीष्' से 'ङीष्' की भी अनुवृत्ति करनी होगी।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा –

यदि पुरुष वाचक प्रातिपदिक पुरुष-सम्बन्ध के कारण स्त्रीलिङ्ग में प्रवृत्त होता है तो उससे 'ङीष्' (ई) प्रत्यय होता है।

तात्पर्य यह है कि यदि पुरुष वाचक प्रातिपदिक का प्रयोग पुरुष सम्बन्ध (यथा पतिपत्नीभाव) के कारण स्त्री के लिए भी किया जाए तो उससे 'ङीष्' प्रत्यय होता है।

हिन्दी में जिस प्रकार 'पण्डित' की स्त्री को 'पण्डिताइन' कहते हैं, चाहे भले ही वह पण्डित न हो, उसी प्रकार संस्कृत में भी पुरुषवाचक प्रातिपदिक से 'ङीष्' प्रत्यय हो स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं। उदाहरण – पुरुषवाचक प्रातिपदिक 'गोप' का प्रयोग जब पति-पत्नीभाव रूप सम्बन्ध को लेकर उसकी स्त्री के लिए होगा तो उससे 'ङीष्' प्रत्यय हो 'गोप ई' रूप बनेगा।

पूर्व की भ संज्ञा होने के कारण अकार का लोप हो —
गोप् ई — गोपी (गोप की स्त्री) रूप सिद्ध होता है।

गोपालन करने वाले को 'गोप' कहते हैं, उसकी स्त्री को उसके सम्बन्ध के कारण ही 'गोपी' कहा जाता है — उसके लिए गोपालन करने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार 'शूद्र' की स्त्री 'शूद्री' होगी, चाहे वह स्वयं 'शूद्र' न हो।

यहाँ गौण अर्थ ही अभीष्ट है। जब मुख्यार्थ बताना होगा, तब अकारान्त होने के कारण 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय हो 'गोपा' (गो पालन करने वाली स्त्री) और 'शूद्रा' (शूद्रजातीय स्त्री) कहेंगे।

जिस पुरुषवाचक प्रातिपदिक के अन्त में 'पालक' होता है, उससे पुंयोग में 'ङीष्' (ई) प्रत्यय नहीं होता। यह प्रकृत सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण — गोपालकस्य स्त्री (गोपालक की स्त्री) —
इस विग्रह में पुरुष सम्बन्ध के कारण 'पुंयोगादाख्यायाम्' सूत्र से 'ङीष्' प्रत्यय प्राप्त होता है, किन्तु 'गोपालक' के अन्त में 'पालक' होने के कारण 'पालकान्तान्न' इस वार्तिक से उसका निषेध हो जाता है।
अकारान्त होने के कारण 'अजाद्यतष्टाप्' से 'टाप्' प्रत्यय हो
'गोपालक आ' रूप बनता है
सवर्ण दीर्घ होने पर 'गोपालका' रूप बनेगा।
पुनः आगे आने वाले सूत्र 'प्रत्ययस्थात् कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः' से इत्व होकर (प्रत्यय में स्थित ककार से पूर्व अकार के स्थान पर इकार होता है)
'गोपालिका' रूप बनता है।